

2691

महाराष्ट्र

१५५०
१५५०
१५५०

१५५०

१५५०

१५५०

१५५०

१५५०

२६८ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 वनवधक मलाय सम्य कला ना वला मन क वाय न न सा है २ ॥ व
 न्द रुवा हि स म गे स का विधी य कि स य न म रु व य क य सा द न
 म मा य ह न स र व ॥ श्री म न व ड का का य डा वि नी व क व र्ति ॥ वि
 व ह न वि का ना य आ ना य ड ग ना न म ॥ या व ना व ड का की च वि

२६९ कला व न ना रु ॥ ला का रु य ड व हि न सा र कि शान म ड म दा
 ॥ म रि शा का व ध मू ना का ना व य रु ॥ श्री का व म ड यं ल
 ह का व रु मू यं व का व म य ग कं व र्द क का व ध क वि सि कं ॥
 ल र्ध स ला ड व ध ह का ॥ मू क व धू दि रु रु स म व म सा सा नं ला व य रु ॥
 क द नू क व ॥ ध नं द कि ध ह म मू का व ध सूर्य म डु लं वा म रु स म

मानियाँ ॥ ॐ आत्मानमवदहं ॥ मिल सकथा ॥ ॥ कका खद ॥ ३

कदय प्रकाशवदमधुवापरिहृष्टं कावं आकाशं वक ॥
कावं शुद्धं हृष्टं कावकं ॥ आलिकालिपक्रिययुक्तवकः
सुवर्धुमचार्य कदकवपरितरुचक्रयमवाकनाकविशुद्धि
हृष्टं ॥ ॥ रूपसंस्थवेसावनवदनात्कस्थकसूर्यसूर्यनसं

अपमनृशधनसंस्तारत्कस्थकवाकविलसतसंस्थकसत्
सवकथागतत्वं श्रीहृक्कवकं ॥ वक्रुयामाहवकी ॥ आकाश
वकी ॥ आकाशवकी ॥ वायुवकी ॥ अग्निवकी ॥ सूर्यवकी ॥
जी ॥ सर्वायाकनशी ॥ अर्यवकी ॥ पृथिवीधातुपाकनी ॥ आपधातु
माचिही ॥ कजाधातुवाकर्षनी ॥ वायुधातुपमनृशधनी ॥ आकाः

अध्यायप्रकाशनी॥पूवकाशालिकातिपकिम(अवकावधः
सूर्यमधुलंकल(अहंकावधविधासधरुगवर्गकृष्टवर्धुषु
कंपथमरुजास्यंवजवजघष्ठाधर्वदिकियास्यांषमकर्तनीया
अंरुकीयास्यांउमवृत्तद्वोगेचकुर्मर्खकृष्टस्यामवत्पीकंकाका
स्याकृष्टडलूकास्याअमास्वानास्यावकासकलास्यापीकाय

मडातीकृष्टपीकायमइकीपीकवकायमदष्टीचकाअमायम
मथनीस्यामकृष्ट॥डौसुमनीसुंरुहंरुह॥डौगृद्ध२हंरुह॥डौ
गृद्धाय२हंरुह॥डौश्रातयकाहगवत्तविद्यावाकहंरुह॥रुः
काश्राका(अवकावधसूर्यमधुलंकल(अहंकावधविश्ववर्जहं
कावाधिशुंरुडस्मिदाययवरुलपमानंविहायवजकनि

काव्ये चरधारा कर्तुं मये ह सिविलाय ॥ ॐ भद्र नीव नीव वः
ऊय न्ववदं ॥ ॐ वज्रया काच दूवदं ॥ ॐ वज्रपंगल दूवदं ॥ ॐ
वज्रविकान दूवदं ॥ ॐ वज्रसच गाल जों मं जों ॥ ॐ वज्रकालानः
वार्क दू ॥ दू काच जा ह दिगया काच समीकृप निवधिका नू
यदि विद्या नू ह दय किल य ह ॥ ॐ घ घा घा ट य २ सर्व विद्या नू

दू ह ॥ ॐ कीलय २ सर्व पायान दू ह ॥ ॐ वज्रकीलय वज्रधवः
आसपय कि सर्व विष विनाय काना काय वाक् विरु वजानः
कीलय दू ह ॥ ॐ वज्रसंगल वज्रकीलय आकाट य २ दू ह ॥
कि निर्विघ्नो हावय ह ॥ ॐ वज्रसच दय स्थ दू काच विष्म कि ४ जगद
धरुत्वा मूक निष्ठु वन गला कय ह मूनादि सं सिद्धि धीवक सं

年

म्रागरा इति यन्मः॥ गायत्र्यन्तदया सिद्धो
रगाद्यस्यानघागुराः सेवतामसयो धीराः
सा श्रीयेवापुनायका १ मयाम्पुनायका २ त्रि
सिप्रतिश्रुते ॥ सप्तपुरा ३ सतेवगेना
मलिज्ञानसा श्री सनेः प्राथदोरुपमेव

नसाह वया व कु व चि त्वा स्त्री पुनर्व
शर्करी

मालातन २२१२
का जि वाकु २२२१२
रो पलतन २१

२३० नमः श्रीवक्रसत्त्वाय नमः ॥ य कः हि ख क विधि ॥ न क संथ कथ प
वसा वि कल म मख क सध मर ॥ सूर्याय गुन म सुल य व ग र्थ का थ सि
क क पाश पूजा पंचमालि पूजा कंसा पूजा मह निह थ ॥ आदि का थ म
मुथि च कि र न स ना कृ च समाधिया थ कल म मख स ध मर थ पि पूजा
द व पूजा ॥ सिधाल स र्थ गुन म सुल द न के मर पूजा संता कृ च विसर्जन ॥
पंचग र्थ वि थ च त्र म सुल वी थ आह दा हा स्वा म गुन या त ल डी का थ अ
र्घ या थ क वा क ॥ ३ गुन च व न प म्ना ना य पंचा हि ख क ना र्थ पूजा का
म ना थ की गुन च व न क म ल अ र्घ प्र ति कृ त्वा हा स र्थ पा द पूजा द क

२३१ दं २ द्वा थ ॥ खान क र्थ हा व ना कृ च क सा लिं त्रि त्वा इ स्था द च क म ला
य लि च उ ह र्थ उप वि षु मि थ स प नि कं च कृ ध च चू पं बि ला य ॥ आ
क र्च न पा था दि व क ना वा मर ह मी थ ॥ अ गु र व ना ॥ धा धि व कृ त व द्वा नां
ज था द न म हा म ह ॥ ह गु र ह ना थ हा डी दा वां क थ ग र प नि र्थ वृ द्ध
पू ण प नि कृ वि या थं ॥ समा पि ता न ना थ य व कृ ड दा हि म ॥ कि प नि
कृ च का या थ क र्का च सं प व कृ आ दि पं वि स्थ वि द्वा ह न ॥ व द्वा नां म रि
थ क लु ज ग ना ना थ व की नां गु म क वा क थ द रु क थ ध म स थ हि ॥ ह
गु र ह ना थ हा डी ना वां क थ ग र प नि सं वृ द्ध पू ण प नि कृ ग थ अ हि थ

कविच अथ किमिदं उदकाहिक कविच विद्या हनधक सिध्य गुण्या
कपाथनायाका ॥ कीकनक ॥ थनक कथिल ठकथ ॥ प्रहाराय हलसा ॥
लनापेकथ ॥ वाक् ॥ कसथागरुष प्रहसमापन महाबाग रं प्रविहय
वैशाचन द्वाचनाकनिव्यवध वरुमार्गन भिगय कदवेदवी ॥ यममुखत
पवभिक सिध मुनिकि शुन्यताकले ॥ हवक जाके दिहक ॥ सप्रहकोत्य
स्यताय सन्ववर्प ॥ स्ननसत्वाहिरुमाहिरिषि ॥ पूनरुज मखाहिसहि
हि ॥ यमानि प्रहगगसमा प्रह सिद्धि लाचनादिविद्या सहि ॥ छदध्वज
पताका वरुवादिन गीत नीश ॥ प्रहनुमादि हसिहि कवकिवया
वर्जिक बाधिविहामृक प्रहृषिक कवलो ॥ संमिषापमानि ॥ ४४ ॥ मति

धिचमार्श्यागिनीगभीयमान ॥ संगजगीरुतावयक ॥ थनप्रहिरुवकविश
निपालाहाहिसं मिषापिथ ॥ ४५ ॥ संगलयादि ॥ धर्मीकमभाकि कचपुजा
नारुसंगलेरुवकुभाकि कचकवाय ॥ सधर्मीरुकाशुक संगलाय ॥ संघा
नियवा ॥ सूचदकि नीया ॥ यभीनिवास ॥ प्रववागसना ॥ रुसंगलेरुवकु
साहिक कचकवाय ॥ ४६ ॥ किमंगजगाथा ॥ ॥ बाधिवरुनवद्वानो ॥ जथाद
नमहामह ॥ समापितानसाथ ॥ यषवजुददाहिस ॥ ॥ रुगुरुनाथ ॥ हलपा
लयाप्रहार्द ॥ वासां वाधमजिया ॥ ॥ वातगु ॥ उदकाहिरुवकलायधून ॥ आश
पाउवाप्रहिरुवक ॥ विहविषाथमाल ॥ धकथिष्यगुण्या ॥ कंनूनापयान

माशानमूलपात्रभावनमधिकृतय ॥ तावता ॥ नृपहंता नाधिसिंहव
जवजाक्रात्यस्वहृदि नृपस्यानिरुह्य नमस्तु ॥ कीरुहं दृष्टा संप्रद्य ॥ धन
कीनृत्पत्नके ॥ वाके ॥ महासुखवज्रसत्वाहिस्वकेन सर्वकथागतधिपति
ननदधमरुव ॥ अंगलरुचमसखलखनहाय ॥ अहिखकत्यादि ॥ हंति
खपनि ॥ अहिखक शब्द गधिन धालसा स्वर्गमध्य पातालनेन मस्काव
तां कयापु ददामि सर्ववृक्षातां प्रिगु आनयंसेरुवा ॥ अहिखक समस्त
कथागतया स्वतारुदन उत्पत्ति शयाद्यं गु ॥ अहिखक कुमिरु
विश्वधूत ॥ पंचपहा पूजा ॥ पून अष्टस्वता ॥ वाधिवज्रनवहानी यथापि

रुमहासह समापि गाननाथय बवजाद दाहिम ॥ हं नृहताथ वाधिव
जवद्वपु उपनिस्तु वियाथं जिपि न कायाथयाम स्काचभं सकट या अहि
धक जिमिरु विसविद्याह न ॥ धनमकूनन पूयक ॥ तावता ॥ भिष्य आन
नसरुव नृपीन सनसत्त्व ग कीरुहं नरुष्टक कथागतद वीलि ॥ कुरुवति
चिन्नमान रूपवजादि हि नृपनीय माने मंगलगी नं तावयता ॥ वजाधिपति
नमनेकं ॥ अष्टकनक वज्रादि घटि नं बलसकटं वज्रमहासुखन
सत्त्व रूपी पंचनथागत मध्यस्थि ॥ भिष्य वज्रवहिनं सवध्या स्वामक
ट नृपति वस्तु म मध्यल्लारु पा ॥ हृदयमधिकृत्य वयथाक्रमी म

म ॥ हस्तपत्र ॥ अथ शिवजीन्यास मन्त्रः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अहिरवकविलम्बम् ॥ अथ जिमिह चक्राय अथाकाचसं घट्टया अत्रिषु
 कविसेविषाह ॥ शिवना ॥ भिष्यं खं काचक्रा ख अत्यन्तं सभाघसिधि
 विराग्य स्तनसत्वाकिर्य ॥ घट्टाचसं घसिद्धि विराग्य ॥ मखले खन
 हाथ ॥ डोगलमिहरी ॥ अहिरवक श्यादि ॥ वक्राधिपति त्वामहि
 विषमि किष्कवक्र समयत्वं ॥ ४ ॥ वक्रघट्ट अअ ॥ कथ कपानग थि
 थर्क घट्टलडाकाय ॥ डं वक्रघट्ट ॥ हिस्विम सुवक्तृत्वमहं अनत्यन्त
 धर्मीय संस्कार नहि कषय ॥ धर्मीय हिस्विम सुवक्तृत्वमहं अनत्यन्त
 धर्मीय संस्कार नहि कषय ॥ धर्मीय हिस्विम सुवक्तृत्वमहं अनत्यन्त

[illegible]

गालं वायमदयावीगु उदकाहिखक पात्राहिखक मकूठाहिखक वजा
 हिखक घटाहिखक थसकना वायधन आशमत्राहिखक विमविद्या
 हस्त ॥ ममपिनातनास्था यमवजं ददाहिम ॥ हनिष्यपनिथ अहिखक
 यावसंयार्कनमगडा लाथं कंसा अलश्या काधिश्या रुस्मश्या न
 चकस कटिनडातिडा कृमिसंस्त्या कंसकंथ कारुकधलत्रपाशानि
 डा ॥ ॥ कीर्तन ॥ नमस्तुतुनमानम रुक्माहत्वाद्यादि ॥ मकुदानवि
 य ॥ गुनर्नधय ॥ दकाभि मयारुगवन अस्मि संनिहिगारुव सिधनधय
 क ॥ घुगाभि मयारुगवन मयि सीनिगोर्हवा मकुदानयादकला वकु

विद्या ॥ कपयाककधनकाश सिहिलय ॥ थाकाहिममुलाधलक पात्रा
 ने ॥ सुगाकब विसर्जन ॥ सघीमहनि कथ ॥ दकना ॥ आ ॥ कलहिथ ॥ सम
 याचक ॥ गलचक ॥ कृनिपयस हिखकविधिसमाफ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नमः शिवाय

